सर्वाधिक प्रसारित हिन्दी बाल मासिक

देवपुत्र

3, 71, 438

प्रसारण संख्या का विश्व कीर्तिमान रचने वाली
भारत की एकमात्र बाल पत्रिका

हम बच्चे हैं

हम बच्चे हैं छोटे-छोटे, काम हमारे बड़े-बड़े
आसमान का चांद हमीं ने-
थाली बीच उतारा है,
आसमान का सतरंगा-
वह बाकाँ धनुष हमारा है।
आसमान के तारों में वे तीर हमारे गड़े-गड़े।
भरत रूप में हमने ही-
तो दाँत गिने थे शेरों के,
और राम बन दांत किए थे
खट्टे असुर लुटेरों के-
कृष्ण कन्हैया बनकर हमने नाग नथा था खड़े-खड़े।
बापू ने जब बिगुल बजाया
देश जगा हम भी जागे,
आजादी के महासमर में
हम सब थे आगे-आगे
इस झंडे की खातिर हमने कष्ट सहे थे बड़े-बड़े।

नए वर्ष का स्वागत

नये हर्ष, संकल्प नए से, नए वर्ष का स्वागत हो।
यह धरती है सबकी माता,
गोदी में हर जीव पले,
इसके जल से जीवन मिलता
और पवन से सांस चले,
पहला है संकल्प हमारा, माँ यह कभी न आहत हो।
कुछ लोगों ने लोभ स्वार्थवश
काटे हरे भरे जंगल,
प्राणवायु रुक गई बंद है
हर्ष भरा वर्षा मंगल।
वृक्ष उगाएं, वृक्ष बचाएं, वृक्ष प्रेम फिर जाग्रत हो।
हरी भरी हो फिर से धरती
नंदन हो हर वन उपवन,
स्वच्छ पवन, जल मिले सभी को
ज्योति सुधा दे नील गगन।
इस धरती पर स्वर्ग सरीखा, अपना प्यारा भारत हो।